ज्ञानतत्व 425

1 – राजनीति का गिरता स्तर

देश में राजनीति का स्तर कितना गिर गया है, इस का अंदाज इस बात से लगता है कि देश में प्रधानमंत्री पद के प्रमुख दावेदार राहुल गांधी, अरविंद केजरीवाल, शरद पवार, ममता बनर्जी और नीतीश कुमार सरीखे नेता प्रत्यक्ष दिखते हैं। ये सब कोई साधारण लोग नहीं है, बल्कि प्रधानमंत्री पद के दावेदार हैं। पिछले दो-तीन वर्ष पूर्व ही यह जिम्मेदार लोग बड़ी बेशर्मी से यह प्रचारित कर रहे थे कि चुनाव प्रणाली में ईवीएम एक धोखा है। चुनाव में सत्तारूढ़ दल ईवीएम में हेरफेर करता है। अभी दिल्ली में चुनाव हुए, हिमाचल में चुनाव हुए, लेकिन अब कोई कुछ नहीं बोल रहा है। कुछ वर्ष पूर्व जब भाजपा सत्ता में नहीं थी उस समय भी एक बार लालकृष्ण आडवाणी ने ऐसी ही स्तरहीन बात की थी, जैसे आज यह लोग कर रहे हैं।

क्या ईवीएम में कोई छेड़छाड़ संभव है? क्या संवैधानिक संस्थाओं पर इस तरह के मूर्खतापूर्ण आरोप लगाना इतने प्रमुख नेताओं के लिए उचित है? क्या राजनीति का स्तर इतना गिर गया है कि अपनी साफ-साफ हुई हार को स्वीकार करने में भी इतनी मूर्खतापूर्ण बहाने जोड़ने पड़ जाएं। जिस समय ईवीएम की चर्चा हो रही थी उस समय भी मैंने यही लिखा था। यह आरोप बिल्कुल बचकाना है।

झूठ बोलने के लिए भी कुछ बहाने बनाए जाते हैं। देश में किसी भी व्यक्ति को यह कभी संदेह नहीं हुआ कि ईवीएम कोई खराब प्रणाली है। आम जनता मानती है कि ईवीएम निष्पक्ष चुनाव में सहायक है लेकिन योजनाबद्ध तरीके से राजनीतिक दलों के नेताओं ने इस झूठ को सच बनाने की हर संभव कोशिश की। यहां तक कि ईवीएम का मामला न्यायालय में भी चला गया लेकिन वहां भी ईवीएम को सही माना गया। मैं चाहता हूँ कि राजनीति का स्तर इतना ना गिराया जाए कि राजनीतिक दलों के द्वारा प्रचारित किसी सत्य को भी आम जनता झूठ समझने लगे ।

2–कम्यूनिस्ट-नीति

एक प्रमुख व्यक्ति ने यह साफ-साफ कहा है कि रूस या तो यह लड़ाई जीत लेगा या दुनिया खत्म हो जाएगी। उसने जो भी कहा है, वह उसकी अकेले की सोच नहीं है। दुनिया के सभी कम्युनिस्ट यही सोचकर चलते हैं कि बंदूक की ताकत पर वह सारी दुनिया को अपने अधीन कर लेंगे। इस प्रकार की सोच बर्बादी के लक्षण होते हैं। कभी हिटलर ने भी ऐसा ही सोचा था और द्वितीय विश्व युद्ध की शुरुआत कर दी थी, जिसका परिणाम दुनिया ने प्रत्यक्ष देखा है। करीब आठ दशक बाद इतिहास अपने को फिर से दोहरा रहा है। भारत में भी कुछ ऐसे लोग हैं जो हिटलरशाही का समर्थन करते हैं। वह लोग अब रूस का समर्थन करते हैं। कुछ लोग तो चीन का भी समर्थन करते हैं और कुछ ऐसे भी लोग हैं जो उत्तर कोरिया तक से

सहानुभूति रखते हैं। यद्यपि अब लोगों की संख्या लगातार घटती जा रही है।

आज यदि भारत के आंतरिक मामलों की बात हो तो यहां नक्सलवाद भी नियंत्रित हो रहा है और हिटलरवाद भी नियंत्रण में है। रूस के समर्थन में यूक्रेन के खिलाफ भारत के हिटलरवादियों की जो बाढ़ आई हुई थी वह अब धीरे-धीरे ठहर गई है। हिटलर का अंतिम परिणाम तो दुनिया देख ही चुकी है। अब रूस और चीन की आक्रामकता का परिणाम भी वैसा ही होगा, इसकी संभावना अब अधिक दिखती है। तानाशाही हारेगी और लोकतंत्र जीतेगा। दुनिया रूस की हठधर्मिता के कारण ना ही झुकेगी और ना समाप्त होगी। अतः साम्यवाद को या तो अपना मार्ग बदलना होगा या जल्द ही समाप्त होने के लिए तैयार रहना होगा। रूस और चीन की धमकी से दुनिया में भय का ऐसा कोई वातावरण नहीं बना है और ना बनने की कोई उम्मीद है। दुनिया के तानाशाहों को इस प्रकार के बड़बोलेपन से बचना चाहिए। इस प्रकार की धमकी वाली भाषा दुनिया स्वीकार नहीं करेगी।

3- पाकिस्तानी बड़बोलापन

पाकिस्तान के एक मिनिस्टर ने नरेंद्र मोदी की कटु आलोचना की और अभद्र शब्दों का प्रयोग किया। श्री बिलावल भुट्टो ने जो भी किया, वह सोच-समझकर किया, योजना बनाकर किया। उनकी टिप्पणी से भारत सरकार और भाजपा को भी बहुत लाभ

हुआ। दूसरी ओर पाकिस्तान के शासक पक्ष को भी इस टिप्पणी का लाभ मिला। स्वाभाविक है कि इस टिप्पणी के बाद भारत में राष्ट्रवाद की एक बेमौसम आंधी-सी आ गई। पाकिस्तान में भी राष्ट्रवाद की तेज हवा चलने लगी। भुट्टो की टिप्पणी का ना तो कोई संदर्भ था और ना ही कोई जरूरत थी। लेकिन एक अनावश्यक टिप्पणी करके उन्होंने दोनों देशों के राष्ट्रवादियों को अपने-अपने देश में अपने अनुकूल हवा बहाने का मार्ग प्रशस्त कर दिया। इस तरह भारत सरकार ने भी इस पर तीखी टिप्पणी की और पाकिस्तान सरकार ने भी। यहां तक कि बदले की भावना में परमाणु हथियार के इस्तेमाल तक की धमकी दे डाली।

मैं बहुत सोचता रहा कि आखिर इस टिप्पणी का औचित्य क्या था? अब तो भारतीय विपक्षी दलों के लिए भी असमंजस की स्थिति बन गई। उन्हें भारत सरकार के पक्ष में खड़ा होना पड़ा। पाकिस्तान में भी तमाम विपक्षी दल इसी प्रकार के संकट में पड़ गए। राजनीति का स्तर इतना नीचे गिर गया है कि आज चालाक राजनेताओं द्वारा इसी प्रकार के बेमौसम के बादल आमंत्रित कर दिए जाते हैं। दोनों देशों के कुछ नेता तो हमेशा इसी ताक में रहते हैं कि जैसे वह इस प्रकार के बादलों का बेसब्री से इंतजार करते रहते हैं। स्पष्ट दिखाई देता है कि ना भुट्टो की टिप्पणी का कोई मतलब है और ना ही किसी प्रकार की प्रतिक्रिया का कोई मतलब है लेकिन भारत और पाकिस्तान की राष्ट्रभक्त हस्तियां अपने-अपने हथियार लेकर मैदान में आकर खड़ी हैं।

4- मजबूरी में महिलाएं

उत्तर प्रदेश के रायबरेली में एक व्यक्ति प्रतिदिन शराब पीकर घर आता था और अपनी पत्नी को नशे में पीटता भी था। परेशान होकर उस महिला ने एक दिन मौका पाते ही अपने पति की हत्या कर दी और लाश को कपड़े से ढंक कर आराम से सो गई। उसने बच्चों को भी कह दिया कि पिता को मत जगाना। सुबह उठकर खाना बना कर वह अपने काम पर चली गई और रात होने पर लाश को घर से निकाल कर सड़क पर रख दिया। कितना आश्चर्यजनक है कि कोई महिला अपने ही पति की हत्या करके उसकी लाश के बगल में आराम से रातभर सोई रही ! लेकिन एक दूसरा प्रश्न यह भी खड़ा होता है कि उस महिला के समक्ष कोई और दूसरा विकल्प ही क्या बचा था? देखा जाए तो वर्तमान कानून के अनुसार पति और पत्नी के अलग-अलग होने में बहुत लंबी कानूनी अड़चनें हैं, कई बरसों की रुकावटें हैं। रोज दिन मार खाते रहने से अच्छा उसके पास इस घुटनभरी जीवन से बचने का कोई मार्ग नहीं दिखा। तब उसने मजबूरी में यह कदम उठाया। ऐसी घटना कोई अकेली घटना नहीं है। आए दिन परिवार के आंतरिक झगड़ों से तंग होने के बाबजूद अलग-अलग होने का कोई विकल्प ना देखकर इस प्रकार की हत्याएं होती रहती हैं। क्या हमें इस मामले पर गंभीरता से सोचना नहीं चाहिए कि पारिवारिक विवादों में परिवार अलग होने की इच्छा के बाबजूद, इतनी कठिन कानूनी प्रक्रिया क्यों बनाई गई है? यदि इस प्रकार की कानूनी दिक्कतें बनी रहती हैं तो इस प्रकार के विवाद लगातार बढ़ते जाएंगे। यदि घुटन में रहना मजबूरी है और

अलग-अलग होने के रास्ते बंद हैं तो इस संबंध में हमें फिर से सोचने की जरूरत है। परिवार के किसी भी सदस्य को कभी भी परिवार से अलग होने या अलग करने की पूरी स्वतंत्रता होनी चाहिए। आप इस प्रकार कानून के बंधन से परिवार को जोड़ कर रख नहीं सकते हैं। परिवार व्यवस्था आपसी तालमेल और सामंजस्य से चलती है, किसी कानून से नहीं चलती।

5- राहुल गांधी की अधूरी समझ

राहुल गांधी ने कहा है कि भारत में दो विचारधाराओं के बीच संघर्ष है, एक विचारधारा है संघ की और दूसरी विचारधारा है धर्मनिरपेक्षता की। आर्थिक मामलों में भी दो विचारधाराएं हैं- एक पूंजीवाद की और दूसरी है समाजवाद की। सिर्फ भारतीय समाज में ही नहीं, बल्कि मैं तो यहां तक समझता हूँ कि पूरी दुनिया में दोनों विचारधाराओं के बीच कड़ा संघर्ष चल रहा है, जिसकी झलक भारत में साफ-साफ दिखाई देती है। एक विचारधारा कम्युनिस्ट, इस्लाम और नेहरू की है, जिस विचारधारा में तानाशाही है, वहीं दूसरी विचारधारा है संघ और हिंदुत्व की। यह एक अलग विचारधारा है जिसमें राष्ट्रवाद की तीव्र गन्ध आती है। इसी तरह आर्थिक मामलों में भी साम्यवाद और नेहरू की विचारधारा है समाजवाद की । जबकि संघ और हिंदुत्व की सांस्कृतिक विचारधारा समाजवाद से टक्कर ले रही है, समाज वाद से नहीं।

मैं समझता हूँ कि अब दुनियां को इस्लाम, साम्यवाद, नेहरू और समाजवाद से मुक्ति चाहिए। समाज को क्रमशः हिंदुत्व, संघ और वर्तमान समाजवाद से समाज वाद की तरफ बढ़ना चाहिए, जिसका नेतृत्व भारत ही कर सकता है और भारत करेगा भी। गांधी ने समाजवाद नहीं, समाज वाद का महत्व बताया था। वर्तमान भारत में नेहरू, इस्लाम, साम्यवाद और समाजवाद से मुक्ति की दिशा में संघ-परिवार और नरेंद्र मोदी सफलतापूर्वक आगे बढ़ रहे हैं, लेकिन अभी समाज वाद के विषय में उनकी प्रगति साफ नहीं दिखती है। हम, आप तथा समाज के अन्य प्रबुद्ध लोग मिलकर संघ और नरेंद्र मोदी का मार्गदर्शन करें कि अब दुनिया को समाजवाद से मुक्ति चाहिए और इसकी जगह समाजवाद चाहिए। समाजवाद का अर्थ है वर्ग-विद्वेष बढ़ा कर समाज को गुलाम बनाना और समाजवाद का अर्थ है - समाज सर्वोच्च है, समाज मालिक है और राज्य समाज का मैनेजर मात्र है, इस धारणा को मजबूत करना। हमें चाहिए कि हम लगातार इस्लाम, नेहरू, साम्यवाद और समाजवाद से मुक्ति के लिए नरेंद्र मोदी और संघ को मजबूत करें। दूसरी ओर हम समाज सर्वोच्च है मतलब असली मालिक समाज है और राज्य समाज का मात्र मैनेजर है। इस धारणा को भी एक तीसरी शक्ति के रूप में मजबूत करते रहें। आर्थिक मामलों में भी हम टैक्स लगाओ और बांट दो, अमीरों से धन लेकर गरीबों को दे दो - इस धारणा को ठीक नहीं समझते हैं। हमें दुनिया से प्रतिस्पर्धा करनी है तो हमें गरीबों को कमजोर नहीं बनाना है। हम चाहते हैं कि गरीब, ग्रामीण और श्रमजीवियों को किसी भी प्रकार के टैक्स से मुक्ति मिले। दूसरी ओर गरीबों में मेहनत करने की इच्छा पैदा हो, उनका आत्मविश्वास बढ़े।

चाहे गरीब हो या अमीर सभी अपनी-अपनी कार्यक्षमता के अनुसार आगे बढ़ें। यही समाज की आदर्श स्थिति होगी। मैं राहुल गांधी को सलाह देना चाहता हूँ कि देश इस्लाम, साम्यवाद और नेहरूवाद अथवा समाजवाद से आगे नहीं बढ़ेगा बल्कि देश आगे बढ़ेगा हिंदुत्व से और समाज वाद से। भारत में विचारधाराओं का जैसा संघर्ष चल रहा है उसमें राहुल गांधी गलत सोच रखते हैं और उन्हें मेरी सलाह है कि वे अपनी सोच-विचार पर पुनर्विचार करें।

6- सामाजिक सदभाव

बिहार में आरजेडी के एक प्रतिष्ठित नेता अब्दुल बारी सिद्दीकी से व्यक्तिगत रूप से मैं मिल चुका हूँ और उनके व्यवहार का प्रशंसक हूँ। वह व्यवहार के मामले में नर्म इस्लाम के पक्षधर रहे हैं और इस्लाम की बहुत चिंता भी करते हैं। कल उन्होंने काफी निराश होकर कहा कि अब मेरे बच्चों का भारत में कोई अस्तित्व नहीं है। बच्चों को धीरे-धीरे विदेशों में रहने के बारे में सोचना चाहिए। भारत में ऐसा सोचने वाले बहुत-से मुसलमान हो गए हैं जो भारत को जल्दी ही दारुल इस्लाम के पक्ष में देखना चाहते थे। कुछ सावरकरवादी हिंदू भी बार-बार यह भविष्यवाणी करते थे कि अगर ऐसा ही चलता रहा तो अगले 10-20 वर्षों में भारत पूरी तरह इस्लामी देश हो जाएगा। इन सावरकरवादियों की भविष्यवाणीयां भी सिद्दीकी जी के लिए एक उम्मीद बन जाती थी कि भारत का मुसलमान लगातार प्रयत्नशील है और भारत का कट्टरपंथी हिंदू निराश होता जा रहा है। यहां पर पिछले कुछ वर्षों से जब से भारत

में नरम हिंदुत्व आगे आया है और जब से नरेंद्र मोदी और मोहन भागवत ने साथ मिलकर सारी दुनिया में मजबूत हिंदुत्व की उम्मीद बढ़ाई है तब से सिद्दीकी जी सरीखे लोगों की हिम्मत टूटती जा रही है। जो लोग यह सोचते थे कि भारत दारुल इस्लाम बनेगा वह निराश होते जा रहे हैं। उन्हें लगता है कि अब धार्मिक कट्टरता भारत में कभी वापस लौट कर नहीं आ सकेगी। कट्टरवादी हिंदुओं के खिलाफ तो कट्टरवादी मुसलमानों को जीत का बहुत विश्वास था लेकिन जब से सामाजिक समानता के आधार पर तर्क और विश्वबंधुत्व को हाथ में लेकर गांधी मार्ग से हिंदुत्व को आगे बढ़ाया जाने लगा तब तो कट्टरपंथी इस्लाम की सारी हेकड़ी निकल गई। अब भारत में सावरकरवाद और नेहरूवाद के बीच कोई सीधा टकराव नहीं अब तो सीधा टकराव है नरेंद्र मोदी - मोहन भागवत की समान नागरिक संहिता और धार्मिक कट्टरता के बीच। निश्चित रूप से इस टकराव में धार्मिक कट्टरता हारेगी। गुजरात में प्रवीण तोगड़िया और महाराष्ट्र में कट्टरपंथी ठाकरे परिवार का पतन अब्दुल बारी सिद्दीकी जैसे कट्टर मुसलमानों को अत्यंत निराश कर रहा है। सिद्दीकी जी को यदि भारत में ही रहना है तो अब भारत दारुल इस्लाम तो नहीं बन सकेगा भले ही राम-कृष्ण और मोहम्मद के बीच एक सामंजस्य पूर्ण तालमेल बनाने वाली कोई व्यवस्था बन जाए। भारत से जितनी जल्दी धार्मिक कट्टरता समाप्त हो जाए उतना ही हिंदुत्व के लिए लाभदायक है।

मैं अब्दुल बारी भाई को सलाह देना चाहता हूँ कि आप सिर्फ बच्चों के लिए ही नहीं, अपने विषय में भी सोचिए। भारत में हिंदुओं ने आप को जितना अधिक सम्मान दिया है, आप एक सच्चे मुसलमान होने के नाते उस सम्मानजनक व्यवहार का एहसान मानें। पश्चाताप करने या कोई असंभव उम्मीद पालने से कोई लाभ होने वाला नहीं है क्योंकि अब भारत धार्मिक कट्टरवाद से प्रायः मुक्त होता जा रहा है। अब भारत सरकार सावरकरवादियों के हिंदुत्व के अनुसार नहीं, गांधी के हिंदुत्व के आधार पर चलेगी। उम्मीद है कि मित्र के समान अब्दुल भाई जी दारुल इस्लाम के सुखदायक सपने से जग कर यथार्थ और वर्तमान में जीने की आदत डालें, यही उचित होगा।

7- नेताओं-कर्मचारियों की मिलीभगत

हिमाचल प्रदेश में अभी-अभी विधानसभा चुनाव संपन्न हुआ है। पुरानी पेंशन योजना का मुद्दा इस चुनावी परिणाम में बहुत कारगर रहा। स्पष्ट है कि आज भी भारत का समस्त सरकारी कर्मचारी पूरी आबादी का सिर्फ दो प्रतिशत है और यदि उनके परिवार के सदस्यों के अतिरिक्त सभी राजनेताओं को भी जोड़ दिया जाए तो यह बढ़कर साढ़े तीन प्रतिशत हो जाता है। लेकिन ये साढ़े तीन प्रतिशत लोग इतने संगठित और प्रभावशाली हैं कि वह पूरे विधानसभा चुनाव को प्रभावित कर देते हैं। पूरा देश जानता है कि यह पेंशन योजना पूरे समाज के लिए एक बोझ है। हमारी सरकार सामान्यतया सरकारी कर्मचारियों को कई गुना अधिक वेतन और

सुविधाएं देती हैं। उसके बाद भी वे सरकार से अधिक सुविधा मांगते हैं और सरकार उनके सामने झुक जाती हैं क्योंकि सरकार से जुड़े हुए राजनेता भी ऐसी सुविधाओं को लूट का माल समझते हैं। यह लूट चुंकि सरकारी कर्मचारियों की मदद से होती है, इसलिए सरकारी कर्मचारी इस लूट के माल में अधिकतम हिस्सा चाहते हैं। भारत की जनता को यह समझना चाहिए कि यह नेता और कर्मचारी एक ही थैली के चट्टे-बट्टे हैं। कुछ प्रदेशों में पुरानी पेंशन योजना पुनः बहाल की जा रही है। अन्य प्रदेशों में भी इस योजना की मांग की जाएगी और इस मांग को नरेंद्र मोदी सरकार भी चुपचाप स्वीकार कर लेगी। इसके लिए खुलकर जन-जागरण होना चाहिए। ना सरकारी कर्मचारियों की सुविधाएं बढ़नी चाहिए, और ना ही राजनेताओं को मिलने वाली सुविधाएं और उनके अधिकार बढ़ने देना चाहिए।

8-सामाजिक सदभावना की ओर झुकाव

अब भारत में धीरे-धीरे बदलाव आ रहा है। अब यहां कट्टरवाद के खिलाफ एक वातावरण बन रहा है। राहुल गांधी भी मंदिर-मंदिर घूमने लगे हैं। केजरीवाल जी ने तो बाकायदा लक्ष्मी और गणेश की फोटो नोट पर छापने की वकालत की है। हिंदुत्व की सामूहिक शक्ति का विपक्ष को आभास होने लगा है। दूसरी ओर संघ ने ईसाइयों की तरफ मित्रता का कदम बढ़ाया है। 25 दिसंबर को संघ ने केरल में ईसाइयों को भी अपने साथ जोड़ने की योजना बनाई है। अब तो संघ मुसलमानों को भी अपने साथ जोड़ना शुरु कर रहा है। इस तरह से विपक्ष का मुसलमानों से मोहभंग हो रहा है और

दूसरी ओर संघ का सावरकरवादियों से मोहभंग हो रहा है। यह बहुत अच्छा लक्षण भारतीय समाज में दिखने लगा है। अब भारत में हिंदुत्व धीरे-धीरे मजबूत होता जाएगा। इससे हम दुनियां को धार्मिक कट्टरवाद के खिलाफ एक नया संदेश दे सकेंगे। इस्लाम को भी अपना मार्ग बदलना ही होगा क्योंकि अगर इस्लाम अपना मार्ग नहीं बदलता है तो समाप्त भी हो सकता है। भारत में ईसाईयों और संघ परिवार के बीच भी एकता का वातावरण बन रहा है। भारत में पसमांदा मुसलमानों को भी अपने साथ जोड़ने की योजना संघ बना रहा है। इसलिए मुसलमान भाइयों से मेरा निवेदन है कि धार्मिक कट्टरता छोड़िए, संगठनवाद और साम्प्रदायिक एकजुटता छोड़कर सामंजस्य और सामाजिक तालमेल व सद्भावना के बारे में सोचना शुरु कर दीजिए जैसा कि भारत का राजनैतिक विपक्ष सोच रहा है या जैसा कि संघ परिवार सोच रहा है। धार्मिक कट्टरवाद के खिलाफ दुनियाभर में एक लहर चल पड़ी है और भारत में इस लहर की गति बहुत तेज है।

9- राहुल गांधी की बेतुकी बातें

राहुल गांधी ने अपने भाषण में यह रहस्योद्घाटन किया है कि चीन और पाकिस्तान भारत पर हमला करना चाहते हैं। दूसरी एक महत्वपूर्ण बात राहुल गांधी ने यह भी कहा है कि वर्तमान समय में भारत बहुत कमजोर स्थिति में है और वर्तमान भारत पर पाकिस्तान और चीन का मिलकर हमला करना अधिक सुविधाजनक

है। यह दोनों मिलकर भारत पर हमला कर सकते हैं और कब्जा कर सकते हैं।

मैं अभी तक नहीं समझ सका कि राहुल गांधी अपने दिये भाषण में क्या कहना चाहते हैं। राहुल जी को यह कैसे जानकारी है कि चीन और पाकिस्तान मिलकर भारत पर हमला करना चाहते हैं। दूसरा महत्वपूर्ण प्रश्न उनसे यह है कि ऐसा कह कर वो देश को क्या संदेश देना चाहते हैं? क्या भारत सरकार इस समय बहुत कमजोर स्थिति में है? क्या चीन और पाकिस्तान के लिए यह बहुत अच्छा अवसर है कि वह इस परिस्थिति का लाभ उठा ले ? मैं अब तक नहीं समझ सका कि शत्रु पक्ष को इस प्रकार की जानकारी देना कहां तक उचित है। क्या राहुल गांधी की पाकिस्तान और चीन के साथ कोई अंदरूनी मित्रता है या कोई अंदरूनी जानकारी है, जिसके आधार पर राहुल जी इस प्रकार की भविष्यवाणी कर रहे हैं। मुझे तो ऐसा कुछ भी नहीं लगता है। मुझे तो यह लगता है कि राहुल गांधी कुछ-कुछ मतिभ्रम के शिकार हैं। अन्यथा कोई भी भारतीय वर्तमान परिस्थिति में ऐसी कल्पना नहीं कर सकता कि यह शत्रु के लिए अच्छा समय है या शत्रु को अब चोट करनी चाहिए। मैं तो यही समझता हूँ कि हर भारतीय के लिए चीन और पाकिस्तान वर्तमान परिस्थितियों में शत्रु के समान हैं।

10- एक्ट्रेस की नासमझी

एक एक्ट्रेस इसलिए आत्महत्या कर लेती है कि उसके प्रेमी ने उसके साथ विवाह करने से इंकार कर दिया। मैं नहीं समझता कि इस आत्महत्या को इतना तूल क्यों दिया जा रहा है। किसी के साथ कुछ दिन रह जाने का यह अर्थ नहीं है कि अब जीवनभर साथ रहना ही होगा। हम जब चाहें किसी से भी अलग हो सकते हैं। विवाह के बाद भी अलग होने की स्वतंत्रता होनी चाहिए। विवाह के पहले तो ऐसा कोई बंधन हो ही नहीं सकता। तुनिषा शर्मा और शीजान खान मामले को जितना गंभीर बताया जा रहा है, इतना गंभीर है नहीं। आत्महत्या कोई अपराध नहीं है। आत्महत्या के लिए कोई अन्य तब तक दोषी नहीं हो सकता जब तक उसकी कोई प्रत्यक्ष भूमिका ना हो। नए-नए कानून बनाकर आत्महत्याओं को भी अपराध मान लेना और उसके आधार पर कानून बनाना अनावश्यक है और गलत भी है। मैं लव-जिहाद के खिलाफ हूँ। धर्म-परिवर्तन के भी खिलाफ हूँ। लेकिन शीजान प्रकरण में अब तक ऐसा कोई ठोस आधार नहीं पाया गया है।

11- संस्कृति और व्यक्तित्व

आज मैं यहां तीन संस्कृतियों की तुलना कर रहा हूँ। मेरे अनेक मित्र परंपरागत रूप से जी रहे हैं। कुछ सुखी हैं, कुछ दुखी हैं। लेकिन हम तीनों मित्रों ने कुछ अलग प्रकार का जीवन जीने की कोशिश की। मेरे एक निकट के मित्र वर्षों तक मेरे साथ रहे। पूंजीवादी विचारों के थे। अमेरिका में रहकर उन्होंने खूब धन कमाया। बहुत बड़े पैसे वाले बन गए। पत्नी से तलाक ले लिया।

बेटों से अनबन हो गई। अभी देहरादून में रहते हैं। बेटे ने पहली पत्नी से तलाक लेकर दूसरा विवाह किया। दूसरे बेटे ने भी पिता को अलग कर दिया। अब वे उद्योगपति एन आर आई एक धर्मशाला में रोटी तक के लिए परेशान हैं। आदत वही पुरानी है। उन्हें पैसे के प्रति बहुत अधिक लोभ है और उस आर्थिक मोह के कारण अपने बच्चों से भी संबंध बहुत खराब हैं। अब उनके लड़के की मृत्यु हुई है तो बहू के साथ मुकदमेबाजी शुरू कर रहे हैं। ऐसा है मेरे इस पूंजीवादी मित्र का जीवन ।

मेरे एक दूसरे मित्र हैं जो पूरी तरह कम्युनिस्ट हो गए हैं। नक्सलवाद की तरफ जाने लगे। उनका सिर्फ एक ही काम है कि पूंजीपतियों को गालियां देना और उम्मीद करना कि गालियों के बदले पूंजीपति उन्हें गुप्त रूप से आर्थिक मदद कर देंगे जैसा आमतौर पर कम्युनिस्ट करते रहते हैं। कारखाने बन्द कराते हैं फिर पैसे लेते हैं और चालू करवाते हैं। ईमानदार बने रहते हैं इस तरह कम्युनिस्ट का अपना जीवन हमेशा ईमानदार के रूप में चलता रहता है और गालियां देकर के व्यक्तियों का मुंह बंद करते हैं। मेरे इस मित्र की भी यही हालत रही। परिणाम हुआ कि गालियां देना उनकी आदत बन गई। पूंजीपतियों ने उन्हें पैसा नहीं दिया तो उनकी हालत खराब होती चली गई क्योंकि वह तानाशाही प्रवृत्ि के थे। कम्युनिस्ट तानाशाही होते ही हैं इसलिए परिवार से भी परेशानी पैदा हुई। अब एकाकी जीवन बिता रहे हैं और फ्रश्ट्रेशन में जी रहे हैं अब बहुत दुखी हैं। सारी दुनिया उन्हें खराब दिखती है लेकिन उनकी कोई सुनने वाला नहीं है और एक तीसरा मित्र वाराणसी में रहकर

भारतीय जीवन पद्धति से जी रहे हैं । बीमार रहते हैं किसी को गाली नहीं देते किसी से कुछ मांगते नहीं है लोग उन्हें स्वेक्षा से देते हैं वह प्रायः इंकार कर देते हैं पूरी तरह संतुष्ट हैं सुखी हैं परिवार में अच्छा जीवन जी रहे हैं। मैं अपने तीनों मित्रो की तुलना करता हूँ तो एक मित्र अमेरिका की तरफ देख रहे थे और संपत्ति की तरफ देख रहे थे। दूसरे मित्र चीन की तरफ देख रहे थे और तानाशाह बनने की कोशिश कर रहे थे। तीसरे मित्र भारत की तरफ देख रहे थे और परंपरागत जीवन दे रहे थे। अब मैं यह देख रहा हूँ कि मेरे तीसरे मित्र अन्य दो की तुलना में बहुत अधिक संतुष्ट और सुखी है क्योंकि मेरे तीसरे मित्र को पता है कि खाली हाथ आया था और खाली हाथ जाऊंगा जबकि शेष मेरे दोनों मित्रों को यह पता है कि खाली हाथ आया था और मुट्ठी बांधकर जाऊंगा।

12 - मुद्रा का अवमूल्यन

आज के अखबारों में एक समाचार प्रमुखता से छपा है कि 36 वर्ष पूर्व एक मोटरसाइकिल की कीमत मात्र ₹18000 थी आज उस मोटरसाइकिल की कीमत पौने दो लाख के करीब है। इस समाचार को बहुत सनसनीखेज और आश्चर्यजनक बताया गया है जबकि 36 वर्ष में उक्त मोटरसाइकिल की वास्तविक कीमत कम हुई है। रुपए की वास्तविक कीमत के हिसाब से उक्त मोटरसाइकिल की कीमत दो लाख से अधिक होनी चाहिए थी । स्वतंत्रता से लेकर आज तक एक मूल रुपए 155 वर्तमान रुपए के बराबर है। 36 वर्ष पूर्व जब मोटरसाइकिल 18000 की थी उस समय के रुपए का

वास्तविक मूल्य आज के रुपए के आधार पर देखने की जरूरत है। उस समय एक दिन की मजदूरी क्या थी? किसी सरकारी कर्मचारी का वेतन क्या था? उसका ठीक-ठीक अगर आकलन करेंगे तो आज मोटरसाइकिल की कीमत कम हुई है। उस समय सोना, चांदी और जमीन के मूल्य क्या थे? उसके साथ भी तुलना करने की जरूरत है। इतने बड़े-बड़े राष्ट्रीय स्तर के समाचार पत्रों का इस तरह के सनसनीखेज समाचार बनाना एक सामाजिक बुराई है। समाचार पत्र के प्रकाशक और लेख लिखने वाले लेखक को यह बात साफ करनी चाहिए कि उसका इस तरह का लेख लिखने का आशय क्या है। मेरे विचार से स्वतंत्रता के बाद महंगाई घटी है और लोगों का जीवन का स्तर ऊंचा उठा है। अब सनसनीखेज समाचारों की दुकानों की भी पोल खुलने लगी है।

मैं अपने पाठक मित्रों से यह जानना चाहता हूँ कि वर्तमान में पौने दो लाख रुपए मूल्य की मोटरसाइकिल आज से 36 वर्ष पूर्व के 18000 /- रुपये की मोटरसाइकिल से महंगी कैसे हो गई?

13- काँग्रेस पछताकर भी क्या करेगी

कांग्रेस पार्टी में ए के एंटोनी एक गंभीर विचारक के रूप में जाने जाते हैं। उन्होंने यह कहकर सनसनी फैला दी है कि कांग्रेस पार्टी सिर्फ मुसलमानों को साथ लेकर कभी सत्ता में नहीं आ पाएगी। अब भारत का हिंदू नरम हिंदुत्व पर भी भरोसा नहीं कर रहा है। भारत का हिंदू जनेऊ और मंदिर के नाम पर विश्वास करने को

तैयार नहीं है। भारत के हिंदुओं को साथ लिए बिना कोई भी बदलाव संभव नहीं है। भारत के हिंदुओं में कांग्रेस पार्टी के प्रति संदेह पैदा हो गया है। इस संबंध में कांग्रेस पार्टी को गंभीरता से सोचना पड़ेगा। कांग्रेस नेता की यह बात तो पूरी तरह सच है लेकिन इसका समाधान क्या है यह कोई बता नहीं पा रहा है। वर्तमान भारत में नरेंद्र मोदी के पक्ष में राजनैतिक व्यवस्था एकजुट होती जा रही है। भारत का विपक्ष मोदी से नहीं लड़ पा रहा है बल्कि आपस में ही दूसरे नंबर के लिए संघर्ष कर रहा है। सभी विपक्षी दल विपक्षी नेतृत्व की लड़ाई लड़ रहे हैं। कांग्रेस नेता एंटोनी ने पहले भी यही बात कही थी और अब दुबारा भी उन्होंने यही कहा है। यदि कांग्रेस पार्टी मुसलमानों को छोड़ दे तो विपक्ष का स्थान भी खो देगी और यदि मुसलमानों के भरोसे ही रहे तो संभव है कि दो-चार वर्ष और इसी तरह क्षेत्रीय पार्टी की तरह जिंदा रहने का अवसर मिल जाए। एंटोनी साहब की बातों में दम है लेकिन अब पछताए होत क्या जब मोदी बन गए शेर।

14- राहुल गांधी को पप्पू कहना कितना सही, कितना गलत

राहुल गांधी को आमतौर पर लोग पप्पू कहते हैं, मैंने कभी नहीं कहा और आज भी नहीं कहना चाहता क्योंकि राहुल गांधी एक शरीफ आदमी है, भले आदमी है। पप्पू कहने से शराफत को नुकसान होता है, व्यक्तित्व में हल्कापन आता है । लेकिन शराफत के नाम पर यदि बार-बार मूर्खता की जाए तो मेरे सामने भी संकट खड़ा हो जाता है। अभी कुछ दिनों पहले ही अपनी पदयात्रा के दौरान राहुल

गांधी ने जोर-शोर से यह बात उठाई थी कि सुरक्षाकर्मी उनके कार्यकर्ताओं से अनावश्यक पूछताछ करते हैं। सुरक्षाकर्मी प्रयत्न करते हैं कि उनके प्रशंसक उनकी सभा से दूर रहे। राहुल की सभा में उपस्थिति कम हो इस बात की सुरक्षाकर्मी लगातार कोशिश करते हैं। अभी दो-तीन दिन पहले राहुल गांधी ने यह आरोप लगाया था कि यात्रा के दौरान उन्हें कम सुरक्षा दी जा रही है। उनका आरोप था कि उनकी जान को खतरा है और सरकार जानबूझकर उनकी सुरक्षा को कम कर रही है। आमतौर पर कभी सुरक्षाकर्मी ऐसे राजनैतिक आरोपों का जवाब नहीं देते लेकिन कल ही सुरक्षाकर्मी की ओर से यह बताया गया कि राहुल गांधी खुद ही बार-बार सुरक्षा घेरा तोड़ते हैं। सुरक्षाकर्मियों द्वारा यह प्रश्न उठाया गया कि बाहर से मिलने वालों की पूछताछ किए बिना सुरक्षा कैसे संभव है? अब तक राहुल गांधी ने या किसी अन्य कांग्रेस के नेता ने इस बात का उत्तर नहीं दिया है। मैंने भी खूब सोचा तो मुझे भी लगा कि सच में यह राहुल गांधी पप्पू ही है और एक साथ यह दोनों प्रश्न उठाता है। मुझे तो यह भी आश्चर्य हुआ कि क्या कांग्रेस पार्टी ऐसे ही मूर्खों का प्रतिनिधित्व करती है जो दो विपरीत बातें एक साथ कह सकते हैं। कांग्रेस पार्टी को सामने आकर यह बात साफ करनी चाहिए।

15-वर्ष 2023 के बारे में मेरा अनुमान

वर्ष 2023 के विषय में अनुमान लगाता हूँ कि इस वर्ष लोकतंत्र मजबूत होगा, अमेरिकन गुट मजबूत होगा, रूस, चीन, उत्तर कोरिया जैसे तानाशाह देश और कमजोर हो जाएंगे, यूक्रेन युद्ध में

रूस को नुकसान बहुत ज्यादा होगा। इसी तरह भारत में भी सावरकरवादी कमजोर हो जाएंगे और नरेंद्र मोदी, मोहन भागवत और संघ परिवार मजबूत होता जाएगा। तीसरी बात कि दुनिया में इस्लाम या तो शांति के मार्ग पर चलना शुरु करेगा अन्यथा समाप्ति की दिशा में बढ़ेगा, भारत से जिसकी शुरुआत होगी। कश्मीर शांत हो गया है, धीरे-धीरे अन्य कट्टरवादी मुसलमान भी कमजोर होते जाएंगे। मुझे ऐसा साफ दिखता है कि भारत में इस्लामिक और सावरकरवादी कट्टरवाद का कोई भविष्य नहीं है। भारत हिंदुत्व की दिशा में दुनियां में आगे बढ़ता चला जाएगा। चौथी बात मुझे यह साफ दिख रही है कि मैंने 8 वर्ष पूर्व ही लिख दिया था कि नरेंद्र मोदी जब तक जीवित रहेंगे वे प्रधानमंत्री बने रहेंगे। यह भविष्यवाणी मुझे आगे भी सच होती दिख रही नरेंद्र मोदी का अभी भारत में कोई विकल्प नहीं है। विपक्षी नेता के रूप में नीतीश कुमार और अरविंद केजरीवाल का भविष्य अच्छा हो सकता है। राहुल गांधी का भविष्य तो पूरी तरह शून्य

16 - संवैधानिक संस्थाओं की कमजोरी

कश्मीर की पूर्व मुख्यमंत्री महबूबा मुफ्ती ने सुप्रीम कोर्ट के मुख्य न्यायाधीश से चिट्ठी लिखकर मांग की है कि वह कश्मीर के मामले में हस्तक्षेप करें। आज महबूबा मुफ्ती की यह चिट्टी यह सिद्ध करती अब महबूबा मुफ्ती को कश्मीर की जनता पर कोई भरोसा नहीं रहा। उन्हें संविधान पर भरोसा नहीं है। उन्होंने न्यायपालिका से सीधे हस्तक्षेप की मांग की है। यह तो बहुत ही

चिंताजनक स्थिति है। कहीं का कोई राजनीतिक नेता सुप्रीम कोर्ट के मुख्य न्यायाधीश को हस्तक्षेप करने के लिए आमंत्रित करे, क्या न्यायपालिका को इस प्रकार विधाई और कार्यपालिक कार्यों में हस्तक्षेप के लिए चिट्ठी लिखना उचित है? क्या राजनीतिक आधार पर महबूबा मुफ्ती और विपक्ष पूरी तरह निराश हो गया है? एक तरफ उसने तो राहुल गांधी की यात्रा में शामिल होने की इच्छा व्यक्त की है और दूसरी तरफ सुप्रीम कोर्ट को चिट्ठी लिख रही है। मैं समझता हूँ कि हमारा विपक्ष पूरी तरह भयभीत है या निराश है अथवा उसे दिखाई नहीं दे रहा कि क्या सही है और क्या गलत है। जब से महबूबा मुफ्ती को यह महसूस हुआ है कि अब भारत की जनता कश्मीर को अपने हाथ से बाहर नहीं जाने देगी। अब कश्मीर में पाकिस्तान की कोई कीमत नहीं है कि वह दखल दे सके सारी दुनिया ने कश्मीर का अंतिम निपटारा स्वीकार कर लिया है तो महबूबा मुफ्ती कभी पाकिस्तान से निवेदन करती है तो कभी न्यायपालिका से निवेदन करती है। मैं फिर कहना चाहता हूँ कि हमारे देश के राजनीतिक नेताओं को संविधान पर भरोसा करना चाहिए। देश की जनता पर भरोसा करना चाहिए। अब कश्मीर का अंतिम निर्णय हो चुका है, कश्मीर का अध्याय बंद हो गया है और अब कश्मीर के मामले में लिखकर गलत किया है सुप्रीम कोर्ट के न्यायाधीशों को भी इस प्रकार की चिट्ठियों के मामले में डांट लगानी चाहिए कि यह न्यायपालिका कोई राजनीतिक मंच नहीं है जो राजनीतिक नेताओं को न्याय दिलाता रहे। मेरे विचार से सुप्रीम कोर्ट ने भी इस प्रकार की चिट्ठियों को स्वीकार करके गलत परंपरा स्थापित की है।

17- कोरोना की यात्रा

कोरोना की बीमारी चीन से शुरू हुई थी और पिछले तीन वर्षों तक सारी दुनिया परेशान रही। लेकिन चीन सुरक्षित रहा। अब ऐसा क्या हुआ कि सारी दुनिया से कोरोना खत्म हुआ तो चीन में एकाएक बढ़ गया। मरने वालों की संख्या लगातार तेजी से बढ़ती जा रही है। जब दुनिया के लिए बीमारी नई थी तब एक अलग बात थी लेकिन अब चीन में कोरोना का एकाएक बढ़ना कुछ समझ में नहीं आता कि क्या कारण है। चीन एक कम्युनिस्ट देश है, भारत में भी सिर्फ केरल एक कम्युनिस्ट स्टेट है। पूरे भारत में शुरुआत में केरल में कोरोना बहुत कम हुआ लेकिन पिछले एक वर्ष में कोरोना से मृत्यु सबसे अधिक केरल में हुई और वर्तमान समय में भी सिर्फ केरल ही कोरोना का गढ़ बना हुआ है। दोनों की एकरूपता समझ में नहीं आती। बिहार, उत्तर प्रदेश, छत्तीसगढ़ अविकसित क्षेत्र हैं, गरीब है, अनपढ़ हैं, स्वास्थ्य सेवाएं कमजोर है पर कोरोना से बच गए। केरल जैसे स्वास्थ्य सुविधा संपन्न राज्य इतने अधिक परेशान क्यों हैं। मुझे तो ऐसा लगता है कि चीन और केरल के बीच में एक समानता है दोनों ही सारी दुनिया में सबसे अधिक झूठ बोलने वाले हैं। सब कुछ छुपा कर रखना और गुप्त रखना दोनों की सबसे बड़ी बीमारी है। चीन और केरल यदि कभी सच भी बोल दे तो झूठ ही लगता है। अब तो ऐसा विश्वास हो रहा है कि दोनों ने बीमारी को छिपा कर गलती की, समय पर इलाज नहीं किया और उसके परिणाम दोनों भोग रहे हैं। ये सारी दुनिया को परेशान कर रहे हैं। इसलिए यह

माना जाता है कि साम्यवाद स्वयं में एक बीमारी है और कोरोना भी साम्यवाद की बीमारी के कारण दोनों को परेशान कर रहा है।

18- नोटबंदी सफल या असफल

जिस समय नोटबंदी हुई उस समय भी मैंने लिखा था कि नोटबंदी सही नीयत से उठाया गया सही कदम है लेकिन कुछ कानूनी गलतियों के कारण नोटबंदी का लाभ जनता को नहीं मिल सका। आज सुप्रीम कोर्ट ने भी छरू वर्ष के बाद यह बात स्वीकार की है कि नोटबंदी सही कदम था। 4 -1 के बहुमत से सुप्रीम कोर्ट का फैसला आया है। एक असहमत न्यायाधीश ने भी सिर्फ यही टिप्पणी की है कि नोटबंदी संसद के द्वारा पास करनी चाहिए थी इसलिए नोटबंदी सफल नहीं हो सकी। मैं मानता हूँ कि नोटबंदी सफल नहीं हो सकी लेकिन इसका यह अर्थ कदापि नहीं है कि मनमोहन सिंह सरीखे नेता चुपचाप 10 वर्ष निकाल दें। हमें प्रयत्न करना चाहिए, यदि कहीं असफल भी होंगे तो भविष्य के लिये अनुभव मिलेगा। नरेंद्र मोदी के किए गए कार्य अच्छी नीयत से किए जा रहे हैं। नोटबंदी का कार्य भी सही था। आज बेचारे राहुल गांधी तो यात्रा में निकले हुए हैं वह तो कुछ बोल नहीं पाएंगे लेकिन नोटबंदी के आलोचकों का आज मुंह बंद हो गया है क्योंकि अब तो नोटबंदी पर सुप्रीम कोर्ट की भी मुहर लग गई है।

19- कम्यूनिस्ट शासन की समानता

पूरी दुनिया में कोरोना के जितने मामले हैं उसमें आधे से अधिक अकेले चीन में हैं और पूरे भारत में कोरोना के जितने मामले हैं उसमें से आधे से अधिक सिर्फ केरल में है। क्या यह मात्र संयोग है अथवा कोई जीवन पद्धति है अथवा कुछ और तरह की शासन पद्धति है। आखिर इन दोनो कम्युनिस्ट शासित क्षेत्रों में क्या समानता है, इस पर गंभीरता से सोचने की जरूरत है। आज पूरे भारत में 2690 कोरोनावायरस के मरीज बचे हुए हैं इनमें से 1450 अकेले केरल में हैं। केरल की अकेली कम्युनिस्ट सरकार है जो चीन की नकल करती है। केरल की सरकार चीन की शासन पद्धति के आधार पर चल रही है। चीन और केरल के बीच में क्या समानता है इस बात को सोचने की जरूरत है। मेरे विचार से शासन पद्धति में पारदर्शिता होनी चाहिए जैसी गोपनीयता चीन और केरल में बरती जाती है वह किसी भी दृष्टि से लोकतंत्र के लिए उचित नहीं है। दुनियां को चाहिए कि केरल और चीन को इस संबंध में सबक सिखाएं ।

20- लोकतंत्र में मीडिया का स्थान

दुनिया में लोकतंत्र के लिए न्यायपालिका, विधायिका और कार्यपालिका के नाम से तीन स्तंभ प्रचलित रहे हैं। आजकल मीडिया के नाम से एक चौथा स्तंभ भी मान्यता ग्रहण कर रहा है। इन चारों का प्रभाव भारत में प्रत्यक्ष अनुभव हो रहा है। चारों ने मिलकर भारत में ऐसा व्यापार खड़ा किया कि देश की स्वतंत्रता और संपत्ति को अपने कब्जे में लेकर अधिकतम लूट मचाई जा सके। मीडिया का

लोकतांत्रिक व्यवस्था से क्या लेना-देना है। मीडिया एक स्वतंत्र व्यापार है लेकिन मीडिया अपने को लोकतंत्र का एक नया चौथा स्तंभ कहकर अन्य लोकतांत्रिक व्यवस्थाओं से तालमेल बनाता है। सरकारें टीवी या समाचार पत्रों को प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से बहुत पैसा देती है। दूसरी ओर टीवी और अखबार सरकारों का प्रचार करते हैं। सभी टीवी और अखबारों में बड़े-बड़े पूंजीपतियों का पैसा लगा होता है। लेकिन पूंजीपति लोग अप्रत्यक्ष तरीके से मीडिया की स्वतंत्रता के नाम पर सरकारों पर दबाव बनाते हैं। मीडिया पूरी तरह एक स्वतंत्र व्यापार है। न्यायपालिका, विधायिका और कार्यपालिका को आम जनता टैक्स के माध्यम से पैसा देती है। यह तीनों तो समाज के मैनेजर या सहायक माने जाते हैं। लेकिन मीडिया को समाज से कोई धन नहीं मिलता है। इसीलिए मीडिया एक स्वतंत्र व्यापार है। मीडिया को समाज सेवा का माध्यम कहना या मानना पूरी तरह से गलत है। लेकिन हमारे लोकतंत्र के तीन स्तंभ मीडिया को भी अपनी लूट शामिल करके उसे लोकतंत्र का चौथा स्तंभ बनाते हैं। टीवी और अखबार में जितनी गिरी हुई राजनेताओं की बहस दिखाई जाती है उसे देखकर लोकतंत्र के प्रति ही घृणा पैदा होती है। टीवी बहस में हमारे नेता लोग चेहरे से लेकर हाथ और पैर का जिस तरह उपयोग करते हैं उसमें ना कोई तर्क होता है ना कुछ सुनाई देता है। यही कारण है कि धीरे-धीरे अब सोशल मीडिया की विश्वसनीयता बढ़ती जा रही है। फेसबुक, इंस्टाग्राम या ट्विटर का उपयोग बढ़ रहा है और टीवी या अखबारों का घट रहा है। मैं यह मानता हूँ कि देश को बर्बाद करने के लिए लोकतंत्र के तीन स्तंभ ही काफी थे अब हमारे लोकतंत्र में मीडिया नाम के व्यापारी को चौथा स्तंभ बनाना उचित

नहीं है। समाज को गुलाम बनाने में लोकतंत्र के चारों स्तंभ लगातार एक-दूसरे के साथ जुड़े हुए हैं।

21-आरक्षण में न्यायपालिका की भूमिका

हमारे देश की न्यायपालिका जातीय आरक्षण के मुद्दे पर बहुत सावधान रहती है लेकिन न्यायपालिका के सभी महत्वपूर्ण पदों पर सिर्फ 2% आदिवासी और हरिजन तथा 2% ही अल्पसंख्यक स्थापित हो पाते हैं। अब भी तीन-चौथाई पदों पर सिर्फ सवर्ण भरे हुए हैं। मैं लगातार लिखता रहा हूँ कि यह एक स्वाभाविक प्रक्रिया है। इस प्रक्रिया को कोई भी कानून बदल नहीं सकता है। आदिवासियों हरिजनों में तीन-चौथाई आबादी श्रमजीवी हैं। आप उन्हें तब तक कहीं स्थापित नहीं कर सकते जब तक वह उतने योग्य ना बन जाएं। किसी भी प्रकार का आरक्षण सिर्फ श्रम शोषण का सिद्धांत है, क्योंकि सिर्फ आरक्षण के दम पर कोई श्रमजीवी बुद्धिजीवी नहीं बन सकता।

प्राकृतिक रूप से मनुष्य की योग्यता तीन बातों से प्रभावित होती है। ये हैं- जन्म पूर्व के संस्कार, पारिवारिक वातावरण और सामाजिक परिवेश। समाज में श्रमजीवियों को जब तक उचित वातावरण नहीं मिलेगा तब तक उसमें से बुद्धिजीवी नहीं निकल सकते हैं। श्रमजीवियों और बुद्धिजीवियों के बीच बढ़ती हुई दूरी घटाकर ही इस उद्देश्य को प्राप्त किया जा सकता है। श्रम का महत्व बढ़ा दीजिए और जजों का वेतन घटा दीजिए तो आपको

आरक्षण की जरूरत ही नहीं रहेगी। लेकिन यदि आप बुद्धिजीवियों की सुविधा बढ़ाकर और श्रमजीवियों का दैनिक मूल्य घटाकर आरक्षण का महत्व कम करना चाहते हैं तो यह श्रमजीवियों के साथ एक धोखा है, इसके अतिरिक्त कुछ नहीं है। स्कूलों में प्रवेश बढ़ रहा है और श्रम करने वालों का श्रमिक क्षेत्र सिकुड़ रहा है। ऐसी स्थिति में स्वाभाविक है कि बुद्धिजीवियों का महत्व कम करने के अतिरिक्त और कोई उपाय नहीं है। इसलिए श्रम का मूल्य बढ़ने दीजिए, श्रमजीवियों की सुविधा बढ़ने दीजिए और आरक्षण को खत्म कर दीजिए। लेकिन स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद ऐसा कोई प्रयास नहीं किया गया।

अंबेडकर एक चालाक व्यक्ति थे। अंबेडकर ने सवर्णों के साथ समझौता करके श्रमजीवियों को धोखा दिया। इसी का परिणाम है कि आज उच्च न्यायिक पदों पर दो-तीन प्रतिशत ही आदिवासी- हरिजन है और अन्य स्थानों पर भी मजबूरी में अयोग्य लोगों को चुना गया है। शिक्षा का उद्देश्य योग्यता का विस्तार होना चाहिए, रोजगार का श्रृजन नहीं। रोजगार का क्षेत्र सरकारी नौकरी पाने तक ही सीमित नहीं होना चाहिए।

22- आज के सफल और लोकप्रिय नेता

स्वतंत्रता के बाद भारत के सबसे अधिक समझदार नेताओं में नरेंद्र मोदी का नाम लिखा गया है। नरेंद्र मोदी को खिलाड़ी और राहुल गांधी को अनाड़ी नेता माना गया है। दोनों की कोई तुलना

नहीं हो सकती। भारतीय जनता पार्टी और नरेंद्र मोदी तथा मोहन भागवत मिलकर ऐसी योजना बना रहे हैं। कि जिसके सामने सारे विपक्षी दल फेल हो गए हैं। नरेंद्र मोदी विपक्षी दलों में फूट डालने में कामयाब हो गए हैं। जब भी कांग्रेस कमजोर होती है तब भारतीय जनता पार्टी के लोग राहुल गांधी की प्रशंसा करके उनको आगे खड़ा कर देते हैं। अभी पदयात्रा में भी संघ और बीजेपी के लोगों ने राहुल गांधी की प्रशंसा की। दूसरी तरफ बीजेपी के लोग अरविंद केजरीवाल को भी बढ़ा-चढ़ा कर रखते हैं। तीसरी तरफ मुस्लिम नेता ओवैसी भी बीजेपी की ही मदद पर जिंदा है। जब तक राहुल गांधी की महत्वाकांक्षा जिंदा तब तक मोदी और भारतीय जनता पार्टी को कोई खतरा नहीं है और मोदी जी राहुल गांधी, अरविंद केजरीवाल और मुसलमान सब की पीठ पर हाथ रख कर सबको लड़ा-भिड़ा कर अपने को मजबूत करते रहेंगे। जरा सोचिए कि विश्व हिंदू परिषद के चंपत राय जी ने तथा राम मंदिर न्यास के एक प्रसिद्ध पुजारी ने किसी योजना के अंतर्गत ही राहुल गांधी की यात्रा की प्रशंसा की है इसलिए मैं बार-बार लिखता हूँ कि भारत भारत की राजनीति अनाड़ी और खिलाड़ी के रूप में बँट गई है। लगातार नरेंद्र मोदी मजबूत हो रहे हैं और विपक्ष कमजोर हो रहा है। महबूबा मुफ्ती सुप्रीम कोर्ट को चिट्ठी लिख रही है। कांग्रेस के नेता पाकिस्तान की तरफ नजर लगाए हुए हैं, कम्युनिस्ट नेता चीन की कलाबाजी देख रहे हैं, मुसलमान नेता विदेशी मुसलमानों से उम्मीद कर रहे हैं और नरेंद्र मोदी सबको लड़ा-भिड़ा कर और मोहन भागवत जी को साथ लेकर लगातार दुनिया में हिंदुत्व को आगे बढ़ा रहे हैं। इसलिए मैं मानता

हूँ कि अभी दुनिया में राजनैतिक मामलों में नरेंद्र मोदी की टक्कर देने वाला कोई नहीं है।

23- सामाजिक समरसता ही सही मार्ग है

पूरे भारत में मुसलमानों की आबादी कुल मिलाकर करीब 16% है और हिंदुओं की आबादी करीब 75% के आसपास। पिछले एक वर्ष का आकलन किया जाए तो एक वर्ष में कम-से-कम आठ मुसलमान युवकों ने हिंदू लड़कियों के साथ प्रेम-संबंध बनाकर उनकी जघन्य हत्याएं की, किसी के 20 टुकड़े किए गए तो किसी के 40 टुकड़े। इन आठों मामलों में युवक मुसलमान थे और महिलाएं हिंदू । लेकिन एक भी ऐसा मामला सामने नहीं आया है जहां युवक हिंदू हो और महिला मुसलमान। तभी तो यह गंभीर प्रश्न है कि मुसलमानों की आबादी कुल 16% होते हुए भी ऐसी आठ घटनाएं हो गई वहीं हिंदुओं की आबादी 75% होते हुए भी ऐसी एक भी घटना नहीं हुई। क्या भारत का मुसलमान अपने को शेर और हिंदुओं को गाय मानता है? क्या ऐसे मामलों में बिना टकराव के भारत का मुसलमान खुद से सोचने के लिए तैयार नहीं है। मैं मानता हूँ कि हिंदू शांतिप्रिय हैं और मुसलमान हिंसक प्रवृत्ति के। मुसलमान आबादी बढ़ाने को एक पवित्र कार्य मानता है वही हिंदू इसे खराब मानता है। लेकिन जब सब्र का बांध टूटेगा और बजरंग दल या सावरकरवादियों को खुली छूट दे दी जाएगी तो उनका का क्या हश्र होगा यह मुसलमानों को सोचना होगा। भारत के मुस्लिम धर्मगुरुओं को अपनी मुस्लिम संस्कृति पर फिर से गंभीरता से सोचना चाहिए। यदि उन्हें इस बात

का घमंड हो कि दुनिया में भी वे लोग 200 करोड़ है और यदि एक बार हम 600 करोड़ एकजुट हो गए तो दुनियां में आपका पता भी नहीं चलेगा। अच्छा तो यही होगा कि आप अभी भी कांग्रेस और कम्युनिस्टों पर भरोसा छोड़ दीजिए। कांग्रेस और कम्युनिस्ट कब आपका साथ छोड़ कर हिंदुओं के साथ जुड़ जाएंगे यह आपको पता ही नहीं चलेगा। चीन में और म्यानमार में आप देख ही चुके हैं। इसीलिए अंधेर नगरी चौपट राजा का आनंद भविष्य के लिए घातक होता है। हिंदू समान नागरिक संहिता के पक्ष में है, बराबरी के अधिकार चाहता है, जियो और जीने दोष पर विश्वास करता है, तो मुसलमानों को भी यह बात समझनी चाहिए।

24- चोर-चोर मौसेरे भाई

प्राचीन समय से भारत और भारतीय संस्कृति में महिला और पुरुष के बीच कोई भेदभाव नहीं था। सबको योग्यता के अनुसार प्रगति का समान अधिकार था। किसी भी महिला को मां और बेटी तथा बहू और पत्नी के रूप में अलग-अलग अधिकार और नियंत्रण थे। कुल मिलाकर प्रत्येक महिला को बराबर के अधिकार थे। समाज में भी महिलाओं को विशेष सम्मान प्राप्त था। जब इस्लाम आया तब महिलाओं के अधिकार छीनकर पुरुषों को दे दिए गए और जब इसाईयत आई तब पुरुषों के अधिकार छीन कर महिलाओं को दिए गए। आज भी हमारी भारतीय संस्कृति ईसाइयों से प्रभावित है और महिला सशक्तिकरण का गंदा नारा भारत में लगाया जा रहा है। महिलाएं समाज को ब्लैकमेल कर रही हैं। आवारा लड़के मिलकर

आवारा लड़कियों के साथ इस ब्लैकमेलिंग में मदद कर रहे हैं। भारत के नेता महिलाओं की ब्लैकमेलिंग का लाभ उठा रहे हैं क्योंकि समाज में महिला और पुरुष के बीच टकराव पैदा करना ही सबसे सफल राजनीति मानी जाती है। हमारे देश का हर नेता पूरी ईमानदारी से पुरुष वर्ग को कटघरे में खड़ा करके महिला सशक्तिकरण का नारा लगाता है। अब समय आ गया है कि समाज को इन आवारा महिलाओं और पुरुषों से मुक्त कराया जाए। अब हमारी भारतीय संस्कृति को पुरुष प्रधान इस्लामिक संस्कृति और पुरुष विरोधी ईसाई संस्कृति की नकल छोड़कर अपनी भारतीय संस्कृति की ओर लौट जाना चाहिए जहां पारिवारिक एकता भावना की प्रधानता हो। परिवार में कौन मजबूत हो, यह परिवार तय करेगा कोई कानून तय नहीं कर सकता। समाज में सभी महिलाएँ चरित्रवान है और सभी पुरुष गलत है, इस तरह का घातक नारा बंद होना चाहिए। कानून के अनुसार व्यक्ति एक इकाई हो। प्रत्येक व्यक्ति के अपने व्यक्तिगत आचरण के अनुसार उसके साथ कानून का व्यवहार हो । किसी भी प्रकार का लिंग-भेद उचित नहीं है। वर्तमान समय में कानून का सहारा लेकर धूर्त और आवारा महिलाएं शरीफ पुरुषों को ब्लैकमेल कर रही हैं, इसे तत्काल रोका जाना चाहिए।

25- सबसे अच्छा गांधी मार्ग

भारत, पाकिस्तान और चीन लगभग एक साथ स्वतंत्र हुए। पाकिस्तान धार्मिक कट्टरवाद की दिशा में आगे बढ़ा और अब तक कश्मीर के लिए लड़ता रहा। पाकिस्तान सांप्रदायिक कट्टरवाद से भी

हमेशा लड़ता रहा। चीन क्षेत्रीय विस्तारवाद की दिशा में आगे बढ़ता रहा। चीन ने हमेशा से यह कोशिश की कि वह अपनी ताकत के दम पर अपना विस्तार करता रहे। भारत चुपचाप अपनी प्रगति की दिशा में काम करता रहा। भारत ने हमेशा पाकिस्तान और चीन से अपनी सुरक्षा की। इसने विस्तार का सपना कभी नहीं देखा। यहां तक कि भारत ने सावरकरवादियों को भी कभी कोई महत्व नहीं दिया। आज आप पाकिस्तान की हालत देख लीजिए। वह बर्बाद हो गया है और भीख का कटोरा लेकर पूरी दुनियां में घूम रहा है लेकिन उसे भीख भी देने वाला कोई नहीं है। पाकिस्तान में खाने को गेहूँ नहीं मिल रहा है। उसकी आर्थिक स्थिति बहुत खराब है। सामरिक स्थिति भी बहुत खराब है। दुनिया में पाकिस्तान की कोई इज्जत नहीं रह गई है। पाकिस्तान के लोग भाग-भागकर भारत आ रहे हैं, चोरी से भारत आ हैं, क्योंकि उन्हें भारत स्वर्ग जैसा दिखता है। पाकिस्तान की ऐसी दुर्दशा सिर्फ इसलिए हुई कि ज्ञानतत्व पाक्षिक 01 फरवरी से 15 फरवरी

पाकिस्तान ने धार्मिक कट्टरवाद का सहारा लिया। आज तो ऐसी हालत हो गई है कि अफगानिस्तान भी पाकिस्तान को आंख दिखा रहा है। लेकिन पाकिस्तान अभी भी कश्मीर की रट लगाए हुए हैं, क्योंकि उसे बर्बाद होना पसंद है, लेकिन कश्मीर छोड़ना पसंद नहीं हैं।

दूसरी ओर चीन भौतिक उन्नति और ताकत के मामले में भारत से कई गुना आगे बढ़ गया है। अमेरिका को टक्कर दे रहा है। लेकिन चीन दुनिया में बदनाम हो गया है, क्योंकि चीन पर कोई

विश्वास नहीं कर रहा है। चीन ने अपने पड़ोसी सभी छोटे-छोटे देशों को भी धोखा दिया। चीन का अपने पड़ोसियों के साथ सिर्फ व्यापारिक संबंध है कोई भावनात्मक नहीं है।

तीसरी तरफ भारत को देखिए । भारत लगातार दुनिया में अपना सम्मान बढ़ा रहा है और शांति से रह रहा है। अगर भारत भी पाकिस्तान की तरह सावरकरवाद की चपेट में आ गया होता तो भारत का भी वही हाल होता जो आज पाकिस्तान का रहा है। अगर भारत भी कहीं चीन को देखकर विस्तारवाद की दिशा में आ जाता तो भारत और चीन के बीच युद्ध होते रहता। दुनियां मध्यस्थ बन जाती लेकिन भारत ने विषम परिस्थिति में भी शांति से काम लिया, इसलिए आज भारत की इज्जत दुनियाभर के देशों में है। चीन से लोग डरते हैं, पाकिस्तान से नफरत करते हैं और भारत की इज्जत करते हैं। इसलिए मेरा यह सुझाव है कि हमें गांधी के मार्ग पर चलना चाहिए, सावरकर के मार्ग पर नहीं। हमें पाकिस्तान और चीन की नकल नहीं करनी चाहिए। हमने अपनी भारतीय संस्कृति पर गर्व है। हम इस्लामिक, पाश्चात्य अथवा साम्यवादी संस्कृति से बचकर दुनिया को एक नया संदेश दें।

26–महिला हो या पुरुष, भेदभाव उचित नहीं

आमतौर पर यह माना जाता है कि महिलाएं पुरुषों की तुलना में अधिक सच बोलती हैं लेकिन सच्चाई इसके विपरीत है। झूठ बोलना या कोई भी अपराध करना महिला या पुरुष का भेद नहीं

करता भले ही महिलाएं पुरुषों की तुलना में अधिक सफाई से झूठ बोलती हैं। आज एक ऐसा ही मामला प्रकाश में आया है जिसमें एक नाबालिग लड़की ने अपने एक प्रेमी के कहने पर उस प्रेमी की सौतेली मां पर गोली चलाई। उस लड़की और लड़के ने मिलकर ऐसा ड्रामा रचा कि कुछ दिन पहले उस नाबालिग लड़की ने अपने प्रेमी के खिलाफ बलात्कार की रिपोर्ट लिखवाई थी और कल ही उस लड़की ने उस तथाकथित बलात्कारी लड़के की मां को गोली मारकर मीडिया में यह सिद्ध करने की कोशिश की कि लड़की ने नाबालिग होते हुए भी बलात्कार का बदला लिया। नाबालिग लड़की ने जिस तरह अपने प्रेमी की माँ पर गोली चलाई उस घटना की देशभर में बहुत प्रशंसा हुई। विचारणीय प्रश्न यह है कि यदि पुलिस उस घटना को नहीं सुलझाती तो मीडिया और राजनेता उस लड़की के परिवार को भी बहादुरी का इनाम देने को तैयार हो जाते। मीडिया और राजनेता बिल्कुल आंख बंद करके सच्चाई पर पर्दा डाल रहे हैं। न्यायपालिका मीडिया के झूठे प्रचार से साफ-साफ प्रभावित हो रही है और राजनेता मीडिया के साथ मिलकर समाज को गुमराह कर रहे हैं। बिना सोचे-समझे हमारे राजनीतिक नेता सार्वजनिक धन का दुरुपयोग कर रहे हैं। इस संबंध में आम जनता को जागरूक होना चाहिए। महिलाएं कम झूठ बोलती हैं, यह बात पूरी तरह झूठ है। मैंने तो यह भी सुना है कि प्राचीन समय में आमतौर पर महिलाएं ही विषकन्या का काम किया करती थी। आज भी पाकिस्तान की महिलाएं बड़ी सफाई से भारत में अपना जाल फैलाती है और ऊपर से सच बोलने का नाटक भी करती है। इसीलिए इस संबंध में समाज को सावधान हो जाना

चाहिए। समाज में महिला और पुरुष का भेद समाप्त करिए और सबको बराबरी का अधिकार दीजिए ।

27- एक तरफ अनाडी दूसरी तरफ खिलाड़ी

राहुल गांधी ने कहा है कि खाकी पेंट पहनने वाले कौरवों की संतान होते हैं। यह टिप्पणी ऐसे व्यक्ति ने की है, जो प्रधानमंत्री पद का दावेदार है। मैं मानता हूँ कि राहुल गांधी में बहुत अधिक बचपना है। उन्हें भारतीय संस्कृति की कोई समझ नहीं है। राहुल ने जिस तरीके से अपनी मां को गले लगाया तथा अपनी बहन प्रियंका का खुलेआम चुंबन किया, वह पारिवारिक आधार पर अतिशय सम्मान का प्रतीक हो सकता है किंतु भारतीय संस्कृति के हिसाब से इन दोनों क्रियाओं का सार्वजनिक प्रदर्शन अच्छा नहीं माना जाता। पश्चिमी संस्कृति में ऐसा हो सकता है किंतु भारतीय संस्कृति में ऐसा करना उचित नहीं है। राहुल गांधी ने जिस तरह पुजारी समुदाय की आलोचना की है, वह भी उनकी मूर्खता की ही निशानी है। राहुल गांधी जिस तरह हिंदू धर्म की आलोचना कर रहे हैं, उसका सौवां भाग भी इसाईयत या इस्लाम के प्रति समर्पित वह नहीं है। मैं मानता हूँ कि राहुल गांधी हिंदुत्व इस्लाम और ईसाइयत के बीच मोहब्बत का पैगाम लेकर आ रहे हैं और नफरत की दीवार तोड़ने का ढोंग रच रहे हैं। लेकिन हर सभा में चीन और पाकिस्तान पर आक्रमण की बात करके वह कैसी मोहब्बत का पैगाम दे रहे हैं या हिंदुत्व की चर्चा कर रहे हैं, यह समझ में नहीं आता। राहुल ने जिस तरह अपनी माँ और बहन के साथ पारिवारिक प्रेम दिखाया वह भी हिंदुत्व के विरुद्ध है

और पाकिस्तान और चाइना को ललकारना भी हिंदुत्व के विरुद्ध है। राहुल गांधी को यह साफ करना ही होगा कि वह समाज सुधारक की दिशा में जाना चाहते हैं अथवा राजनैतिक नेता बनना चाहते हैं। ठंड में तपस्या करने से किसी के प्रति तपस्वी का भाव तो जग सकता है और कुछ लोगों के मन में जग भी रहा है लेकिन हमारे हिंदू संस्कृति में किसी भी तपस्या को हमेशा सत्ता का मोह छोड़ देना चाहिए। तपस्या और राजनैतिक नेतृत्व दोनों अलग-अलग नाव की सवारी है जिस पर कोई भी एक व्यक्ति एक साथ सवार नहीं हो सकता। राहुल गांधी में बहुत बचपना है और उनमें राजनैतिक अकल आ ही नहीं सकती। राहुल जैसे अनाड़ी और नरेंद्र मोदी जैसे खिलाड़ी के बीच कोई तुलना हो ही नहीं सकती। इसलिए राहुल गांधी को राजनीति छोड़ देनी चाहिए और कांग्रेस का नेतृत्व करते रहें। लेकिन पीएम का दावेदार किसी और को घोषित करें तभी राजनीति ठीक दिशा में जा सकेगी।

28-धार्मिक आधार पर भेदभाव उचित नहीं

संघ प्रमुख मोहन भागवत आजकल बहुत सोच-समझकर और गंभीरता से अपनी बात रख रहे हैं। कल ही उन्होंने यह बयान दिया है कि हिंदुत्व धर्म के आधार पर कोई भेद नहीं करता। मुसलमानों भारत में जरा भी चिंतित होने की जरूरत नहीं है। मुसलमानों को भी भारत में समानता के आधार पर सारे अधिकार प्राप्त है और भविष्य में भी होते रहेंगे लेकिन अब भारत में मुसलमानों को यह सोच छोड़नी होगी कि मुसलमान पहले भारत पर

शासन कर चुके हैं और फिर दोबारा ऐसा संभव है। अब भारत में धर्म के आधार पर कोई सरकार नहीं बन पाएगी इसलिए मुसलमानों को अपनी सर्वश्रेष्ठता का भाव बदला चाहिए क्योंकि समानता का भाव ही सर्वश्रेष्ठ होता है और हिंदू समानता को महत्व देता है। मोहन भागवत ने जो कुछ भी कहा है वह बिल्कुल स्पष्ट है और हिंदुओं के लिए भी एक अच्छा संदेश है कि धार्मिक श्रेष्ठता की जगह समानता का भाव हिंदुत्व की वास्तविक परिभाषा है। मोहन भागवत की यह बात तथाकथित मुस्लिम नेता ओवैसी जी को बुरी लगी क्योंकि वह ओवैसी जी हिंदुओं के खिलाफ डर पैदा कर के मुसलमानों को एकजुट करना चाहते थे और मोहन भागवत का यह बयान उनके प्रयास में बाधक है। मैं समझता हूँ कि भारत के मुसलमानों को भी भागवत जी के इस बयान का स्वागत करना चाहिए।

(110) किसी निष्कर्ष तक पहुँचने में परिभाषाएँ बहुत उपयोगी होती हैं। परिभाषाएं विचार मंथन द्वारा निकली किसी विश्वसनीय अनुसंधान इकाई द्वारा घोषित होनी चाहिए। यदि प्रचलित परिभाषा गलत हो तो उस आधार पर निकले निष्कर्ष का गलत होना निश्चित होता है। वर्तमान विश्व में प्रचलित सामाजिक व्यवस्थाओं के लिए उत्तरदायी अनेक परिभाषाएं या तो असत्य है या विकृत हैं।